ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - IV October - December - 2018

Marathi / Hindi Part - III

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad.

CONTENTS OF HINDI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	बदीउज्जमॉ की कालजयी : रचनाएँ तथा चरित्र सृष्टि **प्रो. डॉ. एम. डी. इंगोले**	६२-६५
१४	विश्व में हिंदी : कल आज और कल **डॉ. चावडा रंजना यदुनंदन**	६६-७१
15	Mauezat in the Poetry of Mahmoud Sami Al Baroudi **Mubassir ur Rahman**	72-76
16	Asarul Quran Ala Sheriz Zuhdi **Mohammed Mujeeb Mohammed Shakeel**	77-80
१७	'काशी का अस्सी' उपन्यास में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का यर्थाथ चित्रण **डॉ. भगवान पी. कांबळे**	८१-८३

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

१७. 'काशी का अस्सी' उपन्यास में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का यर्थाथ चित्रण

डॉ. भगवान पी. कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद.

सारांश

" मनुष्य एक सामाजशील प्राणी होने के नाते उसे अपना जीवन जिने हेतु अन्न , वस्त्र , जल और निवास की आवश्यकता होती है । वह समाज का अंग होने के कारण अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए उसे शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य है। यह सच है कि , वर्तमान समय में मनुष्य का व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन शिक्षा पर निर्भर होता है। आज हम यह देखते है की , शिक्षा जीवन जीने का एक साधन बन गया है। लेकिन मेरे विचार से शिक्षा जीवन जीने का साधन न बनकर मनुष्य का विकास , समाज का विकास और देश के विकास की मजबूत नीव बनने होगी। शिक्षा का वास्तविक जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसीलिए शिक्षा के सभी अंगो का चिकित्सक दृष्टिकोन से अध्ययन एवं परिक्षण होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा के बारे में डॉ.रामपाल सिंह का यह विचार बडा ही आज प्रासंगिक लगता है। वे लिखते है कि , **' शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है और सामाजिक पर्यावरण के साथ अनुकूल करने के योग्य बनाती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उसके विचार एवं व्यवहार को समाज परिवर्तन के लिए हितकर साबीत करती है।'**१ वास्तव में मनुष्य चिंतनशील प्राणी है। पहले सोचकर वह कोई भी कार्य करने लगता है। उसका यह कार्य किसी उदेश्य को लेकर होता है। इस कार्य द्वारा वो अपनी मंजिल तक पहुँच ने का प्रयास करता है। इसीलिए शिक्षा मनुष्य के लिए संजीवनी है। शिक्षा उसके लिए साधन है।मनुष्य को सार्थक कार्य करने हेतु शिक्षा उसके जीवन में अहमं भूमिका निभाती है। शिक्षा के उदेशे्य को लेकर जॉन डयुई का कहना है कि , **' शिक्षा के कोई उदेश्य नहीं होते। उदेश्य केवल व्यक्ति , आभिभावों का एवं शिक्षकों का आदि के होते है । अतः उनके उदेश्यों में अनंत विभिन्नताएँ होती है। ये उदेश्य विभिन्न बालकों के लिए भिन्न -भिन्न होते है। जैसे - जैसे बालक बडे होते जाते है वैसे-वैसे उदेश्य बदलते जाते है।'**२ आज भारत देश को स्वतंत्र होकर एकहत्तर साल हो चुके है। मगर जो परिवर्तन शिक्षा क्षेत्र को लेकर होना चाहिए था वह नहीं हो पाया। देश आजाद होने से पहले यहाँ अंग्रेजी शासन की सत्ता थी। इस बात से सभी भारतवासी परिचित है कि , उस समय भारत में मॅकोलो ने एक शिक्षा प्रणाली की स्थापना की थी - जिसका उदेश्य केवल शिक्षित लोगो का निर्माण करना था। यही शिक्षा पद्धती वतामान समय में भी हमें नजर आती है। आज की यह शिक्षा पद्धती आम लोगों को गुमराह करनेवाली है। शिक्षा के क्षेत्र में आज नीजिकरण ने अपने पैर जमा रखे है। शिक्षा के इस नीजिकरण के कारण सामान्य परिवार के छात्रों के ऊपर अन्याय होता हुवा आज दिखाई दे रहा है। शिक्षा- शिक्षा के रुप में नहीं दी

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

जा रही है बल्कि उसका आज व्यवसाय के रुप में रुपातंर हो गया है। इसके लिए शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार है। परिणम स्वरुप आज जिला परिषद के अनेक स्कुल बंद होने की अवस्था में है। और उसकी जगह नीजि स्कूल ने ली है। इसके संदर्भ डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने कहा है - **'शिक्षा के नीजिकरण का नतीजा स्कूल , विद्यालय , विश्वविद्यालय यह ज्ञान के बाजार पेठ बन जायेंगे और जिसके पास पैसा हो वहीं उसे ले सकेंगा औ गरीब किसान , मजदूर , आम लोग इस ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकेंगे और समाज में ये विषमता का जहर एक दिन सब कुछ चौपट कर , कर ही दम लेगा।'३**

वर्तमान समय में शिक्षा का क्षेत्र कई अधिक भयावह बन गया है। आज शिक्षा को लेकर आम जनता के मन में निराशाजनक वातावरण है। इसे काशिनाथ सिंह ने **काशी का अस्सी** इस उपन्यास में वर्तमान शिक्षा की व्यवस्था पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। यह सच है कि , किसी भी देश को विकसित करने के लिएवहाँ की शिक्षा व्यवस्था अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में शिक्षा व्यवस्था का इतिहास इस बात का गवाह हैं कि, पढने-लिखने का अधिकार विशिष्ठ वर्ग के लोगो को ही था। स्त्रीयों को शिक्षा से दूर रखा जाता था। लेकिन इस शिक्षा व्यवस्था के विरोध में अपनी बूलंद आवाज उठाने का महान कार्य क्रान्तिसूर्य महात्मा जोतिबा फुले और भारत देश की पहली स्त्री अध्यापिका क्रान्तिजोति सावित्रीबाई फुले ने किया।

उन्होंने सभी के लिए शिक्षा के द्वार खुले किए। ३ जूलाई १८८१ को लडकियों के लिए पहला स्कूल खोला। इसके बाद भारत देश आजाद हुआ और भारतीय संविधान में - 'सभी के लिए शिक्षा' का प्रावधान कर राष्ट्र को विकास की दिशा की ओर अग्रेषित किया। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद आज भी हमारी शिक्षा व्यवस्था की स्थिति निराशाजनक है। इसी निराशाजनक स्थिति को लेखक काशिनाथ सिंह ने **काशी का अस्सी** इस उपन्यास में चित्रित किया है।

भारत की शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार , राजनेताओं का हस्तक्षेप , छात्रों का राजनीति के लिए उपयोग आदि कई बातें आज हमें शिक्षा व्यवस्था में दिखाई देती है। इसका यर्थाथ चित्रण काशिनाथ सिंह ने अपने उपन्यास में किया है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित शिक्षा व्यवस्था सिर्फ **काशी** की ही शिक्षा व्यवस्था नहीं है बल्कि पूरे भारत की शिक्षा व्यवस्था है। लेखक ने इस उपन्यास में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक रुप चित्रित किया है। इतना ही नहीं कि लेखक ने इस उपन्यास में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और राजनीति , दिशाहीन अध्यापक , शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार , वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और बेरोजगारी आदि कहीं मुददों पर प्रकाश डाला है। लेखक के विचार से आज का अध्यापक अपने मकसद से भटक रहे है। उनकी अभिरुचि पढना-पढाना और अलग-अलग विषयों में अनुसंधान करने में नहीं रही है बल्कि राजनीति , नशा और व्यर्थ के वाद-विवादों में रही है। लेखक काशिनाथ सिंहजी ने इन स्थित का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत उपन्यास के पात्र संस्कृत विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग में कार्यरत सहयोगी प्राध्यापक संपूर्णानंद मिश्रा को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। संपूर्णानंद मिश्र जी के पास समय का कोई अभाव नहीं है। अनुसंधान में कार्य कम और राजनीति में अनुसंधान ज्यादा करते नजर आते है। वे अध्ययन और अध्यापन उनके बस की बात नहीं है। मिश्रजी की तरह अधिक मात्रा में दिशाहीन प्राध्यापकों की स्थिति आज वर्तमान समय में दिखाई देती है। इस बात को लेखक ने अपने उपन्यास में संपूर्णानंद मिश्र को प्रतिनिधिक रुप में प्रस्तुत किया है।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

लेखक काशिनाथ सिंह ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार करते हुए यह बताया है कि, आज भारत देश विश्व में सबसे युवा देश माना जाता है क्योंकि यहाँ युवा शक्ति अधिक रुप में है। देश के विकास के लिए इन युवा शक्ति का जितना उपयोग होना चाहिए उतना नहीं हो पा रहा है। यह सच है कि आज का युवा वर्ग शिक्षित होकर भी बेकार की जिंदगी जी रहा है। बेरोजगारों की कत्तार लग रही है इसका जिम्मेदार वर्तमान शिक्षा पद्धति है। **काशी का अस्सी** इस उपन्यास में शिक्षा व्यवस्था तें बढता भ्रष्टाचार ,बेरोजगारी की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। लेखक अपने उपन्यास के द्वारा शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते है आज अपने देश में हजारों के तादात में छात्र शिक्षत होकर भी बेरोगार होने के कारण अपना समय बर्बाद कर रहे है। प्रस्तुत उपन्यास का एक प्रसंग यहा बडा प्रासंगित लगता है। इसके बारे में लेखक लिखते है कि , **"मुहल्ले के ऐसे दो(तीन लौंडे उनकी नजरों के सामने घूम गए जिनके हाथ में पेजर था मोबाईल थे । वे कल तक निठले थे, इंटर - बी.ए. करके पिछले चार(पांच सालों से चौराहे पर टिल्ला मार रहे है। बेरोजगार और आवारा साले। लौंडियाबाजी के चक्कर में रहते थे।"**५ अतः स्पष्ट होता है कि छात्रों की इस स्थिति को आज की शिक्षा नीति जिम्मेदार है।

आज हम देखते है कि आज का पढा लिखा युवा वर्ग अपनी जरुरते पूर्ण नहीं कर सकता । परिणाम स्वरुप उसे अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पूर्ण करने के लिए डकैतियाँ करनी पड रही है। युवा वर्ग की इस समस्या को लेखक ने पुस्तुत उपन्यास में बडी ईमानदारी से चित्रित किया है। इस घटना को प्रस्तुत करते हुए लेखक काशिनाथजी खिते है कि - **"हरिश्चंद्र कॉलेज के लडके बडे हरामी है यार। मैं निचे स्कूटर खडा करके एक काम से ऑफिस गया और दस मिनिट बाद वापस आया तो देखा , पिछली सीट ही गायब साले नोच ले गये उतनी ही देर में।"**६ **इससे यह बात स्पष्ट होती है कि , अगर इन युवाओं के हाथों में काम मिलता तो वे चोरी नहीं करते।** इसीलिए इन युवाओं ऐसी शिक्षा प्रदान करे ताति दनके हाथों को काम मिले। मेरे विचार से आज की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन कर उसमे सुधार लाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अंत में निष्कर्ष के रुप में यह कहन अधिक उ चित होगा की काशिनाथ सिंह ने काशी का अस्सी उपन्यास के माध्यम से वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करते हुए इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था के खोकलेपन को उजागर कर आज की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने की आवश्यकता का महान संदेश दिया है।

संदर्भ

१. डॉ. नीता पांढरीपांढे - हिंदी उपन्यासों में शैक्षणिक समस्याएँ - पृ.१७,१८
२. ------ वही ----- पृ.१८
३. प्रा. गौतम निकम - डॉ.बाबासाहेब आंबडेकराचे शैक्षणिक आणि आर्थिक विचार - पृ.१४,१५
४. काशिनाथ सिंह - काशी का अस्सी (उपन्यास) - पृ.४२
५. ------ वही ------- पृ. ८१
६. ------ वही ------

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad.